# फरमान ऐ इलाही

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

**नोट: {आयत नंबर}**

**अल्लाह तआला फरमाते हे (तरजुमा)**

## सूरे बकरा

{53} ए ईमान वालो सब्र और नमाज से मदद हासिल करो.

## सूरे आल ए इमरान

{102} और तुम हरगिज जान न देना मगर मुसलमान होने की हालत मे. लिहाजा हमे अपने अकाइद इबादत, मामलात, मुआशरत और अखलाक वगैरा जिन्दगी के तमाम शोबो को इस्लाम के सांचे मे ढाल देना चाहिये. इसी मे हमारी कामयाबी और नजात हे क्यू के अल्लाह ने इस्लाम ही को हमारे लिये बतौर दीन के पसंद किया हे. इस्लाम के आलावा जितने भी मजहब हे सब बातिल और मनसुख हे. अब कयामत तक इस्लाम ही रहेगा. हर इन्सानकी नजात और कामयाबी इस्लाम ही मे हे. इसी को इख्तियार करने पर पाकीजा जिन्दगी का वादा हे और जन्नत मे दाखले और बेहिसाब रिज्क की खुशखबरी हे.

# सूरे अनआम

{15} और बिला-सुबह हमने दाउद और सुलेमान को इल्म आता फरमाया और उसपर उन दोनों नबियो ने कहा के सब तारीफे उस अल्लाह के लिये हे जिन्होने हमे अपने बहुत से ईमान वाले बंदो पर फजीलत दी.

{43} उन्होने ऐसा क्यू नही क्या कि जब उन्के उपर हमारी तरफ से सख्ती आयी तो वो हमारे सामने आजिजी से जुक पडते? मगर ये कैसे मुमकिन था उन्के दिल तो सख्त हो चुके हे, और शैतान ने उन्को मुतमईन कर दिया हे कि जो कुछ तुम कर रहे हो बहुत ठीक कर रहे हो.

{82} जो लोग ईमान लाये और उनहोने अपने ईमान मे शिर्क की मिलावट नहीं की ईमान इन्ही के लिये हे और यही लोग हिदायत पर हे.

{141} फिजुल खर्च ना करो बेशक वो (अल्लाह ) फिजुल खर्च करने वालो को पसंद नहीं करता.

{162} अल्लाह ने हुजुरﷺ से इरशाद फरमाया आप फरमा दीजिये के बेशक मेरी नमाज और मेरी हर इबादत मेरा जीना और मरना सब कुछ अल्लाह ही के लिये हे जो सरे जहा के पलने वाले हे.

## सूरे आराफ

{27,28} ऐ आदम के बेटो और बेटियो शैतान को ऐसा मौका हरगिज न देना के वो तुम्हे इस तरह फितने मे दाल दे जैसे उसने तुम्हारे मां बाप को जन्नत से निकला जब के उनका लिबास उनके जिस्म से उतरवा लिया था ताके उनके एक दूसरे की शर्म की जगह दिखा दे. वो और उसका जत्था तुम्हे वहा से देखता हे जहा से तुम उन्हे नहीं देख सकते. उन शैतानो को हम ने उन्ही का दोस्त बना दिया हे जो ईमान नहीं लाते और जब ये (काफिर) लोग कोई बेहयाई का काम करते हे तो कहते हे के हम ने अपने बाप दादाओ को इसी तरीके पर पाया हे और अल्लाह ने हमे ऐसा ही हुकम दिया हे. तुम (उनसे) कहो के अल्लाह बेहयाई का हुकम नहीं दिया करता. क्या तुम वो बाते अल्लाह के नाम लगाते हो जिनका तुम्हे जरा इल्म नहीं?

{180} अल्लाह के अच्छे अच्छे नाम हे तुम इन नामो से उसे पुकारो.

{204} और जब कुरान पढा जाये तो उसे कान लगाकर सुनो और चुप रहो ताके तुम पर रहम किया जाये.

{205} अल्लाह ने अपने रसूलﷺ से इरशाद फरमाया और सुबह व शाम अपने रब को दिल ही मे आजिजी

खौफ और हल की आवाज से कुरान पढकर या तस्बीह करते हुवे याद करते रहे और गाफिल न रहे.

## सूरे अनफाल

{33} और ना अल्लाह उन पर अजाब लाने वाला हे इस हाल मे कि वो इस्तिगफार कर रहे हो.

## सूरे तौबा

{34,35} जो लोग सोना चांदी जमा करते हे और अल्लाह की राह मे खर्च नहीं करते उन्हे एक दर्दनाक अजाब की खुश खबरि सुना दो के उनका जमा किया हुवा सोना चांदी उस दिन दोजख की आग मे तपाया जायेगा फिर उन बाद-बख्तो की पेशानिया, करवाते और पीठे दागी जायेगी और उनसे कहा जायेगा ये वो ही सोना चांदी हे जो तुमने जमा किया था अब अपने जमा किये हुवे का मजा चखो.

{72} अल्लाह ने मोमिन मर्दो और मोमिन औरतों से वादा किया हे ऐसे बागात का जिसके निचे नेहरे बहती होगी जिनमे वो हमेशा रहेंगे और ऐसे पाकीजा मकानात का जो सदाबहार बागात मे होंगे. और अल्लाह की तरफ से खुशनूदी तो सब से बडी चीज हे (जो जन्नत वालो को नसीब होगी) यही तो जबरदस्त कामयाबी हे.

{108} अल्लाह खूब पाक रहने वालो को पसंद फरमाते हे.

## सूरे यूनुस

{25} और अल्लाह सलामती के घर (यानि जन्नत) की तरफ दावत देते हे और जिसे चाहते हे सीधा रास्ता दिखते हे.

{107} और अगर अल्लाह तजे कोई तकलीफ पोहचा दे तो कोई उसको दूर करने वाला नही सिवाये खुद उसी के, और अगर तुजे कोई राहत पोहचाना चाहे तो कोई उसके फजल को हटाने वाला नही हे, वो अपना फजल अपने बंदो मे से जिस पर चाहे कर दे वो बडा मगफिरत वाला बडा रहमत वाला हे.

## सूरे हुद

{88} हजरत शोएब (अस) ने अपनी कौम से फरमाया (और मे जिस तरह इन बातो की तुमको तालीम करता हु खुद भी तो इसपर अमल करता हु) और मे ये नहीं चाहता के जिस काम से तुम्हे मन करू मे खुद उसे करू.

## सूरे युसुफ

{2} यकीनन हम ने कुरान को अरबी जबान मे उतरा. मुसल्मानो की असल जबान अरबी हे. लिहाजा हर मुसलमान को अरबी जबान से दिली मुहब्बत और

लगाव होना चाहिये और इस को सिखने की कोशिश करना चाहिये इसलिए के ये इस्लामी जबान हे कुरान की जबान हे हमारे नबीﷺ की जबान हे जन्नत वालो की जबान हे.

## सूरे राद

{26} अल्लाह जिसके लिये चाहता हे रिज्क मे वुसत कर देता हे और (जिस के लिये चाहता हे) तंगी कर देता हे.

{28} खूब समझलो अल्लाह के जिक्र ही से दिलो को इत्मीनान हुवा करता हे.

## सूरे हिजर

{21} हमारे पास हर चीज के खजाने भरे पढे हे मगर फिर हम हिकमत से हर चीज को एक मोईन मिक्दार से उतारते रहते हे.

## सूरे नहल

{10,11} वो ही हे जिसने आसमान से पानी बरसाया जिससे तुम्हे पीने की चीजे हासिल होती हे और उससे दरख्त उगते हे जिनमे तुम जानवरो को चराते हो. इससे अल्लाह तुम्हारे लिये खेतिया, जैतून, खजूर के दरख्त, अंगूर, और हर-हर किस्म के फल उगता हे. हकीकत ये हे के इन सब बातो मे उन लोगो के लिये

बडी निशानी हे जो सोचते समझते हो.

{96} जो कुछ तुम्हारे पास दुनिया मे हे वो एक दिन खतम हो जायेगा और जो अमल तुम अल्लाह के पास भेज दोगे वो हमेशा बाकी रहेगा.

{112} और अल्लाह एक बस्ती की मिसाल बयान करते हे (पेहले मकका मुराद हे, फिर इस तरह के दुसरे शहर भी शामिल हो जायेगे) जो अमन और इत्मीनान वाली थी, उस (बस्तीवालो) की रोजी हर तरफ से उस्को फरावानी (ज्यादती, बड़े पैमाने) के साथ पहोंच रही थी, फिर उस (बस्तीवालो) ने अल्लाह की नेअमतो की नाशुकी की तो अल्लाह ने उन (की नाशुकी) के कामो की सजा मे उसको भुख और खौफ के लिबास का मजा चखाया (यानी जिस तरह लिबास इन्सानके बदन को घेर लेता हे, ईस तरह भुख और खौफ ने उनको घेर लिया).

{119} अल्लाह ने अपने रसूलﷺ से इरशाद फरमाया फिर बेशक आप का रब उन लोगो के लिये जो नादानी से कोई बुराई कर बैठे फिर इस बुराई के बाद वो तौबा कर ले और अपने आमाल दुरूस्त कर ले तो बेशक आप का रब इस तौबा के बाद बडा बख्शने वाला निहायत मेहरबान हे.

# सूरे बनी इसराइल

{23,24} अगर मां बाप मे से कोई एक या दोनों बुढापे की उम्र को पोहच जाये तो तुम उन्हे “उफ” तक न कहो और उनके साथ मुहब्बत का बरताव करते हुवे उनके सामने आजिजी के साथ अपने बाजओ को बिछा दो. और ये दुआ करो ए मेरे रब इन दोनों के साथ रहमत का मामला कीजिए जिस तरह इन्होने मुजे बचपन मे पाला हे.

{26,27} रिश्तेदार को उसका हक देते रहना और मोहताज और मुफस्सिरीनो को भी देते रहना और (माल को) बे-मौका मत उडाना (क्युके) बेशक बे-मौका (माल) उडाने वाले शैतानो के भाई हे और शैतान अपने रब का बडा नाशुक्रा हे.

{32} खबरदार झीना के करीब भी न फटकों. बेशक झीना बडी बेहयाई और बुराई का रास्ता हे.

{34} वादा पूरा करो बेशक वादे की पूछ होगी.

{70} हकीकत ये हे के हम ने आदम की औलाद (इंसान) को इज्जत बख्शी हे और उन्हे खुश्की और समंदर दोनों मे सावरिया मुहैया की हे और उनको पाकीजा चीज का रिज्क दिया हे और उनको अपनी बोहत सी मखलूकात पर फजीलत आता की हे.

## सूरे मरयम

{96} अल्लाह ने अपने रसूलﷺ से इरशाद फरमाया बेशक जो लोग ईमान लाये और उनहोने नेक अमल किये अल्लाह उनके लिये मख्लूक के दिल मे मोहब्बत पैदा करेंगे.

## सूरे अंबिया

{25} अल्लाह ने हुजुरﷺ से इरशाद फरमाया और हमने आपसे पहले कोई ऐसा पैगम्बर नहीं भेजा जिसके पास हमने ये वही न भेजी हो के मेरे सिवा कोई माबूद नहीं इसलिए मेरी ही इबादत करो.

## सूरे मोमिनून

{51} बेशक हम अपने रसूलो और ईमान वालो की दुनिया की जिन्दगी मे भी मदद करते हे और कयामत के दिन भी मदद करेंगे जिस दिन आमाल लिखने वाले फरिश्ते गवाही देने खडे होंगे.

## सूरे नूर

{22} और ईमान वालो को चाहिये के (जिससे उनके हक मे कोई जियादती और कुसूर हो गया हो उसको) वो माफ कर दिया करे और नजर अंदाज कर दे. क्या तुम ये नहीं चाहते के अल्लाह तुम्हे माफ कर दे और अल्लाह बख्शने वाला और बोहत मेहरबान हे.

{30,31} आप मोमिन मर्दो से और मोमिन औरतो से कह दीजिये के वो अपनी निगाहें नीची रखे.

{63} जो लोग अल्लाह के हुकम की मुखालिफत करते हे उन्हे इस बात से डरना चाहिये के उन पर कोई आफत आ जाये या उन पर कोई दर्दनाक अजाब नाजिल हो.

## सूरे अश-शुआरा

{217,220} अल्लाह ने अपने रसूलﷺ से इरशाद फरमाया और आप उस जबरदस्त रहम करने वाले पर भरोसा रखे जो आप को उस वकत भी देखता हे जब आप तहज्जुद की नमाज के लिये खडे होते हे और उस वकत भी आप के उठने बैठने को देखता हे जब आप नमाजो मे होते हे. बेशक वो ही खूब सुनने वाला जानने वाला हे.

## सूरे नमल

{46} तुम लोग अल्लाह से इस्तिगफार क्यू नहीं करते ताके तुम पर रहम किया जाये.

## सूरे कसस

{60} और जो कुछ तुम को दुनिया मे दिया गया हे वो सिर्फ दुनिया की चन्द रोज जिन्दगी गुजरने का सामन और यहाँ की (फना होने वाली) रौनक हे और जो कुछ अल्लाह के पास हे वो बेहतर और हमेशा बाकि रहने

वाला हे क्या तुम इतनी बात भी नहीं समझते?

{77} जमीन मे फसाद मचाने की कोशिश न करो यकीन जानो अल्लाह फसाद मचाने वालो को पसंद नहीं करता.

## सूरे अनकबूत

{6} जो शख्स मेहनत करता हे वो अपने नफे के लिये मेहनत करता हे (वरना) अल्लाह को तो तमाम जहा वालो मे से किसी की हाजत नहीं.

{8} और हमने इन्सानो को उसके मां बाप के साथ अच्छा सुलूक करने का हुकम दिया हे.

{43} और हम ये मिसाली लोगो के लिये बयां करते हे (लेकिन) इन्हे इल्म वाले ही समझते हे.

{45} बेशक नमाज बेहयाई और बुरे कामो से रोकती हे.

{60} और कितने जानवर हे जो अपना रिज्क उठाये नहीं फिरते अल्लाह उन्हे भी रिज्क देता हे और तुम्हे भी और वो ही हे जो हर बात सुनता हे हर चीज जानता हे.

## सूरे रूम

{41} बलाये फैल पडी हे खुशकी और तरी मे लोगो के करतूत से इस वजह से कि अल्लाह उन्के कुछ आमाल का मजा उन्को चखाये ताकि वो लोग बाज आ जाये.

## सूरे लुकमान

{6} और कुछ लोग ऐसे हे जो इन बातो की खरीदारी करते हे जो गाफिल करने वाली हे ताके अल्लाह के रास्ते से बगैर सोचे समझे हता दे और उसकी हंसी उडाए ऐसे लोगों के लिये जिल्लत और रूसवाई का अजाब हे.

## सूरे अहजाब

{21} हकीकत येहे के तुम्हारे लिये हुजुरﷺ की जात मे एक बेहतरीन नमूना हे.

{33} तुम (औरते) अपने घरो मे करार के साथ रहो और (गैर मर्दो को) बनाव सिंगार दिखती न फिरो जैसा के पहले जाहिलियत मे दिखाया जाता था.

{36} जो शख्स अल्लाह और उसके रसूल का कहना न माने वो खुली हुवी गुमराही मे हे.

{41,42} ईमान वालो अल्लाह को बहुत याद किया करो और सुबह और शाम उसकी तस्बीह बयान किया करो.

{71} जिसने अल्लाह और उनके रसूल की बात मानी उसने बडी कामयाबी हासिल की.

## सूरे फातीर

{28} बेशक अल्लाह से उनके वो ही बन्दे डरते हे जो उनकी अजमत का इल्म रखते हे.

{36} और जिन लोगो कुफ्र की रवीश अपना ली हे उनके लिये दोजख की आग हे न तो उनका काम तमाम किया जायेगा के वो मर ही जाये और न उनसे दोजख का अजाब हल्का किया जायेगा, हर नाशुक्रे काफिर को हम ऐसी ही सजा देते हे.

## सूरे साद

{55,58} और बेशक सिरकाशो के लिये बहुत ही बुरा ठिकाना हे यानि दोजख जिसमे वो गिरेंगे. वो कैसी बुरी जगह हे. यहाँ खौलता हुआ पानी और पीप (मौजूद) हे ये लोग उसको चखे और इसके अलावा और भी इस किस्म की मुख्तलिफ नागवार चीजे हे (उसको भी चखे).

## सूरे जुमर

{9} हुजुरﷺ से खिताब हे आप कह दीजिये की क्या इल्म वाले और बे-इल्म बराबर हो सकते हे?

{54} और तुम अपने रबकी तरफ रूजू करो और तुम उस (अल्लाह) के फरमाबरदार बन जावो इससे पेहले के तुम पर अजाब आ पहुंचे, फिर तुम लोगों की मदद नही कि जायेगी.

## सूरे अश-शूरा

{30,31} और जो भी मुसीबत तुम्हे पहुंचती हे वो तुम्हारे हाथो किये हुवे से पहुंचती हे और (अल्लाह) बहुत से

तो दरगुजर कर देता हे और तुम जमीन के किसी हिस्से मे भी हरा नही सकते और तुम्हारा अल्लाह के सिवा कोई भी कारसाज हे ना मददगार.

## सूरे जुखरूफ

{36} और जो अल्लाह की याद से गाफिल होता हे तो हम उसपर एक शैतान मुसल्लत कर देते हे फिर हर वकत वो उसके साथ रहता हे.

## सूरे जासिया

{13} और आसमान व जमीन मे जो कुछ हे सब को उसने अपनी तरफ से तुम्हारे काम मे लगा रखा हे. यकीनन उसमे उन लोगों के लिये बडी निशानिया हे जो गोरो-फिक्र से काम ले.

## सूरे हुजुरात

{10} मुसलमान आपस मे भाई भाई हे.

## सूरे कमर

{22} और हम ने कुरान को नसीहत हासिल करने के लिये आसान कर दिया हे तो कोई हे नसीहत हासिल करने वाला.

## सूरे मुनाफीकुन

{9} तुम्हारे माल और औलाद तुम्हे अल्लाह की याद से गाफिल ना कर दे.

## सूरे तलाक

{2,3} और जो शख्स अल्लाह से डरता हे तो अल्लाह हर मुश्किल से छुटकारे की कोई न कोई सूरत पैदा कर देते हे और उसको ऐसी जगह से रोजी पोहचाते हे जहा से उसको ख्याल भी नहीं होता.

## सूरे तहरीम

{8} ए ईमान वालो अल्लाह के आगे सच्ची पक्की तौबा करो, उम्मीद हे कि तुम्हारा परवरदिगार तुमसे तुम्हारे गुनाह दूर कर दे (यानी माफ कर दे).

## सूरे मुद्दस्सीर

{31} और तुम्हारे परवरदिगार के लश्करों (फरिश्तो) को उसके आलावा कोई नहीं जानता.

## सूरे आदीयात

{68} इन्सान अपने रब का बडा ही न शुक्र हे हालाकि उसको भी इसकी खबर हे (और वो ऐसा मामला इसलिए करता हे) के उसको माल की मोहब्बत जियादा हे.